इन्दिरागान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी
पुस्तक विमोचन समारोह
नाट्यशास्त्र प्रथम भाग
(नेवारी संस्करण)
०३ मार्च २०१६

इन्दिरागान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी द्वारा प्रस्तुत बहुप्रतीक्षित **नाट्यशास्त्र नेवारी संस्करण** के प्रथम भाग का विमोचन समारोह विगत ०३ मार्च २०१६ को तामिलनाडु राज्य के चेन्नई जनपद के मइलापुर में स्थित ***नारद गान सभा*** के सभागार में आयोजित हुआ। सभाध्यक्ष के आसन पर विराजमान थे पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त श्री एन० गोपालस्वामी। समग्र अनुष्ठान तीन भागों में विभाजित था– औपचारिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक।

औपचारिक प्रभाग के प्रारम्भ में माननीय सम्पादक प्रो० कमलेश दत्त त्रिपाठी ने हाथ में पुस्तक लिये हुए, पद्मभूषण डॉ० पद्मा सुब्रह्मण्यम्, सदस्य सचिव (Incharge) श्रीमती वीणा जोशी एवं उनके सहयोगियों ने मन्द गति से सभागार में प्रवेश किया (पूर्णकुम्भ यात्रा)। इस समय सभागार में उपस्थित छात्रों द्वारा पुष्पाञ्जलि से उनका स्वागत किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ जर्जर पूजा से हुआ। सभागार में स्थापित भरतमुनि के मूर्ति का अर्चन–पूजन पारम्परिक शैली से नृत्य तथा संगीत में कुशल छात्राओं द्वारा किया गया। स्वागत सम्भाषण पद्मभूषण डॉ० पद्मा सुब्रह्मण्यम् द्वारा किया गया। तत्पश्चात् मञ्च पर समासीन सभाध्यक्ष सभी सम्मान्य अतिथिवर्ग, नाट्यशास्त्र सम्पादक एवं तत्सम्बद्ध सभी विद्वानों को सम्मानित किया गया। तदनन्तर पूर्व चुनाव आयुक्त, भारत सरकार डॉ० एन० गोपालस्वामी ने नाट्यशास्त्र नेवारी संस्करण के प्रथम भाग का विमोचन कर इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अध्यक्ष श्री चिन्मय गारे खाँ को प्रदान किया। पुस्तक लोकार्पण अनुष्ठान के अन्यतम प्रधान आकर्षण था डॉ० एन् गोपालस्वामी एवं डॉ० पद्मा सुब्रह्मण्यम् द्वारा मुख्य सम्पादक प्रो० कमलेश दत्त त्रिपाठी को भरत इलङ्गो फाउण्डेशन आफ एशियन कलचर के तरफ से **लाइफ टाइम अचिभमेण्ट् अवार्ड तथा भरतपुत्र** उपाधि प्रदान।

अनुष्ठान के शैक्षणिक भाग में सम्पादक प्रो० कमलेश दत्त त्रिपाठी ने इस संस्करण के लिए किए गए कठिन प्रयासों एवं इसके निर्माण मार्ग में उपस्थित हुए बाधाओं को दूर करने के लिए सर्वप्रथम इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अध्यक्ष एवं सदस्य सचिव(Incharge) श्रीमती वीणा जोशी के प्रति अपना आभार व्यक्त किया। नेपाल से संगृहीत नेवारी के ९ अप्रयुक्त पाण्डुलिपियों तथा जयपुर से संगृहीत देवनागरी के २ पाण्डुलिपियों के विषय में अवगत कराते हुए उन्होंने पाण्डुलिपियों के पुष्पिका में लिखे समय के विषय में भी अवगत कराया। उनके अनुसार लम्बे समय से नाट्यशास्त्र आधुनिक विद्वानों को अपनी ओर आकृष्ट किया है और यह पारम्परिक विद्वानों के अध्ययन का केन्द्र रहा है। जिसका लेखन कार्य कश्मीर में हुआ और संरक्षण केरल में। पेरिस, मुम्बई, बडोदरा तथा काशी आदि संस्करण इसके अबाधित परम्परा को दर्शाते है। उन्होंने रामकृष्ण कवि को वास्तविक *भरतपुत्र सम्मान* का अधिकारी माना, जिन्होंने **अभिनवभारती** टीका के साथ **नाट्यशास्त्र** के महत्त्वपूर्ण संस्करण को प्रकाशित किया। उन्होंने कहा नाट्यशास्त्र सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति को समझने के लिए एक दृष्टि प्रदान करता है। भौगोलिक दृष्टि से इसका प्रभाव सम्पूर्ण जम्बूद्वीप पर देखने को मिलता है।

इसके बाद इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अध्यक्ष श्री चिन्मय गारे खाँ ने इस अवसर के महत्त्व को रेखाङ्कित करते हुए कहा कि इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। नाट्यशास्त्र नेवारी संस्करण को प्रकाश में लाकर इस केन्द्र ने एक महत्त्वपूर्ण एवं प्रशंसनीय कार्य किया है। इस अवसर पर उन्होंने डॉ० कपिला वात्स्यायन के योगदान को याद किया। वेद के क्रमबद्धता से सम्बन्धित अपनी जिज्ञासा से भी विद्वानों को अवगत कराया और नाट्यशास्त्र नेवारी संस्करण के दूसरा एवं तीसरा भाग को यथा शीघ्र प्रकाश में लाने के लिए अनुप्राणित किया।

शैक्षणिक विभाग के द्वितीय विन्दु था **नाट्यशास्त्र परिचर्चा में दक्षिण भारत का योगदान** पर एक संक्षिप्त आलोचना चक्र। तामिलनाडु से आये हुए डॉ० नागास्वामी ने **तामिल साहित्य में नाट्यशास्त्र के अवदान** बताते हुए द्वितीय शताब्दी की एक प्रसिद्ध तामिल रचना "*एलङ्गो एडिगल*" का उल्लेख किया जिस पर नाट्यशास्त्र का प्रभाव परिलक्षित होता है। इसमें *भारती, सात्त्वती, आरभटी* एवं *कैशिकी* वृत्तियों के विषय में उल्लेख मिलता है। उन्होंने तामिल साहित्य में प्रचलित "*पाँच तिन्नई*" का भी उल्लेख किया जिसके विषय में नाट्यशास्त्र के "*कक्ष्याविभाग*" में चर्चा की गयी है।

केरल के प्रसिद्ध विद्वान् के०जी० पौलुस ने **मलयालम साहित्य में नाट्यशास्त्र के योगदान** के विषय में प्रकाश डाला। इस तथ्य की प्रामाणिकता के लिए उन्होंने यूनेस्को की रिपोर्ट का भी उल्लेख किया, जिसमें मलयालम साहित्य पर नाट्यशास्त्र के प्रभाव को स्वीकारा गया है। उन्होंने नवम शताब्दी की रचना *सुभद्रा परिणय* एवं *स्थपति संवेदना* का उल्लेख करते हुए कहा इनमें *आङ्गिक, सात्त्विक* आदि अभिनयों के साथ *आख्याता, व्याख्याता* आदि के विषय में वर्णन है। जो भरतमुनि के नाट्यशास्त्र से अनुप्राणित प्रतीत होता है। उन्होंने पद्मभूषण पद्मा सुब्रह्मण्यम् को शास्त्र एवं प्रयोग दोनों में सिद्धहस्त माना।

आन्ध्रप्रदेश से उपस्थित प्रो० पप्पु वेणुगोपाल राव ने **तेलगु साहित्य पर नाट्यशात्र के प्रभाव** को रेखांकित किया। उन्होंने पर्ण्णगी सी०एस्० अप्पा राव द्वारा तेलगु में अनुवाद किया गया नाट्यशास्त्र के विषय में तथा पुष्पेन्द्र कुमार द्वारा किया गया अंग्रेजी अनुवाद का भी उल्लेख किया। उन्होंने नाट्यशास्त्र में वर्णित ध्रुवाओं के उल्लेख के क्रम में तेलगु साहित्य में प्रचलित *प्रवेशदरु* का उल्लेख किया जिसकी तुलना *प्रावेशिकी ध्रुवा* से की जाती है।

कर्णाटक के प्रसिद्ध विद्वान् शतावधानी आर० गणेश ने **कन्नड साहित्य में नाट्यशास्त्रीय पदावलियों** के बहुश: प्रयोग के विषय में अवगत कराया। कन्नड के आदि कवि पम्पा से लेकर नवम शताब्दी के प्रसिद्ध कवि आडबु एवं कन्नड तथा प्राकृत के विद्वान् टी०वी० वेंकटाचलम् शास्त्री, *पदगति* एवं *पादगति* नामक पुस्तक के रचयिता तुलसी रामचन्द्रन् का भी उल्लेख किया। जिनके रचनाओं के उपर नाट्यशास्त्र का प्रभाव स्पष्ट प्रतीत होता है। उन्होंने कहा संगीत शास्त्र के अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ जैसे- *संगीतसार, वराहलीलाव्रत संहिता, राजमानसोल्लास* आदि कर्नाटक से ही लिखे गये। इनमें करणों, गीत तथा वाद्यादि के विषय में वर्णन मिलता है जो नाट्यशास्त्र के नियमावली के अनुरूप प्रतीत होता है।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ० एन० गोपालस्वामी,पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त, भारत सरकार ने इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र के बहुआयामी उद्देश्य की ओर संकेत करते हुए इसके संस्थापक डॉ० कपिला वात्स्यायन की भूरि-भूरि प्रशंसा की एवं इस केन्द्र द्वारा भारतीय संस्कृति की विविध विधाओं का किए गये दस्तावेजीकरण का भी उल्लेख किया। नाट्यशास्त्र नेवारी संस्करण को प्रकाश में लाने के लिए सम्पादक प्रो० कमलेश दत्त त्रिपाठी को तथा इस कार्यक्रम की सफलता के लिए डॉ० पद्मा सुब्रह्मण्यम् को साधुवाद दिया। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ गायत्री कन्नन ने की। धन्यवाद ज्ञापन का कार्य इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र ,नई दिल्ली की सदस्य सचिव (Incharge) श्रीमती वीणा जोशी ने की। सांस्कृतिक प्रभाग में कुशल नृत्याङ्गनाओं द्वारा भरतनाट्यम्, मोहिनीआट्टम् एवं अङ्गहारों की वर्णमय प्रस्तुति हुई।

त्रिलोचन प्रधान